

नमूने के प्रश्न-पत्र की योजना 2011 – 2012

कक्षा – प्रवेशिका

विषय –संस्कृत विशेषः

अवधि – सपादहोरात्रयम्

पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

| क्र.सं. | उद्देश्य | अंकभार | प्रश्न | प्रतिशत |
|---------|-------------------------|--------|--------|---------|
| 1. | ज्ञान | 19 | (7) | 23.75 |
| 2. | अवबोध अर्थग्रहण | 32 | (10) | 40.00 |
| 3. | ज्ञानोपयोग / अभिव्यक्ति | 20 | (6) | 25.00 |
| 4. | कौशल / मौलिकता | 09 | (4) | 11.25 |
| | | 80 | (27) | 100.00 |

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

| क्र. सं. | प्रश्नों का प्रकार | प्रश्नों की संख्या | अंक प्रति प्रश्न | कुल अंक | प्रतिशत प्रश्नों का | संभावित |
|----------|--------------------|--------------------|------------------|-------------|---------------------|----------|
| 1. | अतिलघुत्तरात्मक- I | 1,4 | 1, 1½ | 1+6= 7 | 18.52 | 20 मिनट |
| 2. | लघुत्तरात्मक – I | 5,1 | 2,3 | 10+3=13 | 22.22 | 30 मिनट |
| 3. | लघुत्तरात्मक – II | 1,4,2,1 | 2,3,4,5 | 2+12+8+5=27 | 29.63 | 55 मिनट |
| 4. | निबंधात्मक | 3,1,4 | 3,4,5 | 9+4+20=33 | 29.63 | 65 मिनट |
| | | 27 | | 80 | 100.00 | 170 मिनट |

विकल्प योजना : (i) विकल्प- 23 से 27 तक

पुनरावलोकन :- 10 मिनट

(ii) आन्तरिक-9,11 से 22 तक

प्रश्नपत्रपठन :- 15 मिनट

3. विषय वस्तु का अंकभार –

| क्र.सं. | विषय वस्तु | अंकभार | प्रतिशत |
|---------|-------------------------|--------|---------|
| 1 | रूपसिद्धयः | 15 | 18.75 |
| 2 | सूत्रव्याख्या | 5 | 6.25 |
| 3 | कारकप्रकरणम् | 10 | 12.50 |
| 4 | अव्ययप्रकरणम् | 5 | 6.25 |
| 5 | गद्य व्याख्या | 3 | 3.75 |
| 6 | गद्यसम्बन्धितप्रश्नाः | 5 | 6.25 |
| 7 | कथासारः | 2 | 2.50 |
| 8 | निबन्धः | 4 | 5.00 |
| 9 | पत्रम् | 3 | 3.75 |
| 10 | शब्द-धातुरूपाणि | 6 | 7.50 |
| 11 | वाच्य परिवर्तनम् | 2 | 2.50 |
| 12 | पद्यसम्बन्धितप्रश्नाः | 3 | 3.75 |
| 13 | पद्य-भावार्थः | 3 | 3.75 |
| 14 | पद्य-सम्बन्धित प्रश्नाः | 4 | 5.00 |
| 15 | छन्दांसि | 3 | 3.75 |
| 16 | अलंकाराः | 3 | 3.75 |
| 17 | कोषः | 4 | 5.00 |
| | | 80 | 100.00 |

कक्षा – प्रवेशिका

विषय :—संस्कृतविशेषः

पूर्णांक 80

| क्र. सं. | उद्देश्य इकाई/उप इकाई | ज्ञान | | | अवबोध | | | ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति | | | कौशल/मौलिकता | | | योग | | | |
|----------|-------------------------|----------|------|-------|-------|----------|-------|-----------------------|----------|------|--------------|----------|------|------|-------|--------|--------|
| | | अति. लघू | लघू | | निबं. | अति. लघू | लघू | | अति. लघू | लघू | | अति. लघू | लघू | | | | |
| | | | SA1 | SA2 | | | SA1 | SA2 | | SA1 | SA2 | | SA1 | | SA2 | | |
| * | लघुसिद्धान्त कौमुदी | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1 | रूपसिद्धयः | | | 5(1) | | | 5(1) | | | 5(1) | | | | | 15(3) | | |
| 2 | सूत्रव्याख्या | 1(1) | | | | 2(1) | | | | | | | 2(1) | | (5)3 | | |
| 3 | कारकप्रकरणम् | | | | | 2(1) | | 5(1) | 1(-) | | | | 2(1) | | 10(3) | | |
| 4 | अव्ययप्रकरणम् | | 2(1) | | | | 1(-) | | | 2(1) | | | | | 5(2) | | |
| * | गद्यकाव्यम् | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 5 | गद्य व्याख्या | | | | | | | 3(1) | | | | | | | 3(1) | | |
| 6 | गद्यसम्बन्धितप्रश्नाः | | | 2(1) | | | 2(-) | | | 1(-) | | | | | 5(1) | | |
| 7 | कथासारः | | - | | | | | | | 2(1) | | | | | 2(1) | | |
| 8 | निबन्धः | | - | | | | | | | | | | | 4(1) | 4(1) | | |
| 9 | पत्रम् | | - | | | | | | | | 3(1) | | | | 3(1) | | |
| 10 | शब्द-धातुरूपाणि | 3(2) | | | 3(2) | | | | | | | | | | 6(4) | | |
| 11 | वाच्य परिवर्तनम् | | | | | | | | 2(1) | | | | | | 2(1) | | |
| * | पद्यकाव्यम् | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 12 | पद्यसम्बन्धितप्रश्नाः | | | | | | | 3(1) | | | | | | | 3(1) | | |
| 13 | पद्य-भावार्थः | | | | | | | | | 3(1) | | | | | 3(1) | | |
| 14 | पद्य-सम्बन्धित प्रश्नाः | | | 2(-) | | | 2(1) | | | | | | | | 4(1) | | |
| 15 | छन्दांसि | | | 1½(-) | | | 1½(1) | | | | | | | | 3(1) | | |
| 16 | अलंकाराः | | | 1½(1) | | | 1½(-) | | | | | | | | 3(1) | | |
| 17 | कोषः | | | 1(-) | | | 1(-) | | | 1(-) | | | 1(1) | | 4(1) | | |
| | योग | 4(3) | 2(1) | 8(2) | 5(1) | 3(2) | 4(2) | 9(2) | 16(4) | | 3(1) | 9(3) | 8(2) | 4(2) | 1(1) | 4(1) | 80(27) |
| | कुल योग | | | 19(7) | | | | 32(10) | | | 20(6) | | | 9(4) | | 80(27) | |

विकल्पों की योजना :- (i) विकल्प- 23 से 27 तक

(ii) आन्तरिक-विकल्प- 9,11 से 22 तक

नोट:- कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

नमूने का प्रश्न-पत्र

कक्षा- प्रवेशिका (10)

विषय- संस्कृतविशेषः

अनुक्रमांक

अवधि: 3:15 होरा:

अधिकतमांकाः-80

* परिक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः *

- (i) सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः संस्कृतमाध्यमेन समाधेयाश्च सन्ति ।
- (ii) प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरमुत्तरपुस्तिकायामेव देयम् ।
- (iii) प्रत्येकं प्रश्नभागस्योत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखनीयम् ।

-
- 1 " जश्शसोः शिः" इति सूत्रस्यार्थं लिखत । 1
 - 2 निर्देशानुसारं रूपाणि लिखत । $\frac{3}{4} + \frac{3}{4} = 1\frac{1}{2}$
 (अ) अस्मद् शब्दस्य प्रथमाविभक्तिः
 (ब) रमा शब्दस्य चतुर्थीविभक्तिः
 - 3 निम्नपदेषु मूलशब्दं विभक्तिं वचनं च लिखत । $\frac{3}{4} + \frac{3}{4} = 1\frac{1}{2}$
 (अ) पत्युः (ब) गच्छता
 - 4 निर्देशानुसारं धातुरूपाणि लिखत । $\frac{3}{4} + \frac{3}{4} = 1\frac{1}{2}$
 (अ) गम् धातोः लङ्लकार-उत्तमपुरुषस्य
 (ब) दा धातोः लृट्लकार- मध्यमपुरुषस्य
 - 5 निम्नपदेषु लकारं पुरुषं वचनं च लिखत । $\frac{3}{4} + \frac{3}{4} = 1\frac{1}{2}$
 (अ) नयेतम् (ब) जायन्ते
 - 6 वाच्य परिवर्तनं कुरुत । 1+1= 2
 (अ) बालकः कथां पठति ।
 (ब) मया कलमेन पत्रं लिख्यते ।
 - 7 'दण्डेन घटः' इति प्रयोगे केन सूत्रेण तृतीयाविभक्तिः भवति ? 2
 - 8 सर्वनामस्थानसंज्ञा, नदीसंज्ञा च अनयोः सूत्रे लिखित्वा तयोः अर्थोऽपि लेख्यः । 1+1= 2

- 9 "ङितिह्रस्वश्च" "औङ आपः" "ऋन्नेभ्योडीप्" इति सूत्रेषु द्वयोः सूत्रयोः अर्थः लेख्यः। 1+1=2
- 10 किन्नाम अव्ययम् ? 2
- 11 अधोलिखितसूत्रेषु कयोश्चिद् द्वयोः सूत्रयोः सोदाहरणार्थः लेख्यः। 1½+1½= 3
(अ) येनागविकारः (ब) ध्रुवमपायेऽपादानम् (स) षष्ठी चानादरे
- 12 अधोलिखितछन्दसु कयोश्चिद् द्वयोः छन्दसोः लक्षणोदाहरणे लेख्ये। 1½+1½= 3
(अ) मालिनी (ब) हरिणी (स) प्रहर्षिणी
- 13 अधोलिखितालंकारेषु कयोश्चिद् द्वयोः अलंकारयोः लक्षणोदाहरणे लिखत। 1½+1½= 3
(अ) रूपकम् (ब) विभावना (स) अर्थान्तरन्यासः
- 14 उच्चैः, स्मारं स्मारं, कृत्वा, यथा, विना इत्यादिषु केषांचन् त्रयाणाम् अर्थं लिखित्वा संस्कृतवाक्येषु प्रयोगं कुरुत। 1+1+1= 3
- 15 अधोलिखितशब्दानां पर्यायत्रयं लिखत। 1+1+1+1= 4
(1) मनुष्यः (2) बुद्धः (3) माता (4) औषधम्
- 16 अधोलिखितप्रश्नेषु चत्वारः प्रश्नाः समाधेयाः। 1+1+1+1= 4
(1) उपवेदाः के सन्ति ?
(2) भारतस्य प्रमुखाः पर्वताः के ?
(3) सतां लक्षणं किम् ?
(4) देवाः कैः प्रसन्नाः भवन्ति ?
(5) " प्रतापाय पत्रम्" इतिपाठस्य लेखकः कः ?
(6) रामदेवस्य प्रमुखानि कार्याणि लिखत ?
- 17 अधोलिखित प्रश्नेषु पंचप्रश्नाः समाधेयाः—। 1+1+1+1+1= 5
(i) पुत्रे मुखे सति मनुजः कीदृशीम् अवस्थां प्राप्नोति ?
(ii) धनार्थं कः एकः उपायं शस्यते ?
(iii) उदकार्थं सिंहः कुत्र अगच्छत् ?
(iv) दमनकः सिंहं किम् अपृच्छत् ?
(v) राजानमुपसृत्य कुट्टिनी किमाह ?
(vi) आम्रात्यः कीदृशः स्यात् ?
(vii) वायसदम्पती कुत्र निवसतः ?
- 18 'धूर्तदमनकस्य कथा', 'दुष्टबुद्धिः दमनकः' इत्यस्य एकस्य सरांशो लेख्यः। 2

- 19 रामान्, सर्वेषाम्, सखा, नृणाम् एषु द्वयोः पदयोः सिद्धिः कार्या। $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}=5$
- 20 रमायै, मतीः, सर्वस्यै, श्रियौ एषु रूपद्वयं साधयत। $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}=5$
- 21 ज्ञानम्, वारि, वारिणी, धातृणी एषु रूपद्वयस्य सिद्धिः कार्या। $2\frac{1}{2}+2\frac{1}{2}=5$
- 22 अधोलिखितोदाहरणेषु केषांचन् पंचप्रयोगाणां ससूत्रं विभक्तिं निर्दिशत। $1+1+1+1+1=5$
- (1) गां दोग्धि पयः। (2) मासमधीते।
 (3) पुत्रेण सह आगतः पिता। (4) विप्राय गां ददाति।
 (5) ग्रामाद आयाति। (6) हरये नमः।
 (7) राज्ञः पुरुषः। (8) छात्राणां मैत्रः पटुः।
- 23 अधोलिखितगद्ययोः कस्यचिद् एकस्य सप्रसंगव्याख्या कार्या— 3
- अथ कदाचिद् पिंगलको नाम सिंहः सर्वमृगपरिवृतः पिपासाकुल उदकपानार्थं यमुनातटमवतीर्णः संजीवकस्य गम्भीरतररावं दूराद् एवाऽश्रुणोत् तच्छ्रुत्वाऽतीव व्याकुलहृदयः ससाध्वसम् आकारं प्रच्छाद्य वटतले चतुर्मण्डलावस्थानेनाऽवस्थितः चतुर्मण्डलावस्थानं त्विदं सिंहः,सिंहानुयायिनः, काकरवाः, किंवृत्ताश्चेति। अथ तस्य करटक दमनकनामानौ द्वौ श्रृगलौ मन्त्रिपुत्रौ भ्रष्टाधिकारौ सदानुयायिनावास्ताम्।
- अथवा
- अथ कदाचिद् वृद्धशशकस्य वारः समायातः। सोऽचिन्तयत— अस्त्ययं हिंस्रः सर्वपशूनां त्रासहेतुः। केनोपायेनास्य मृत्युः सम्भवेत् इति। विचार्य मनसि किमपि, स मन्दगत्या सिंहमगच्छत्। महता बिलम्बेन सम्प्राप्तं तं शशकं क्रुद्धः सिंहोऽवोचत् रे क्षुद्र जन्तौ। कुतस्त्वं विलम्बेन समागतोऽसि। शशकोऽब्रवीत् देव। नाहमत्रापराधी। आगच्छन्नंह बलात् सिंहान्तरेण पथि घृतः। तस्याग्रे पुनरागमनाय शपथं कृत्वा स्वामिनं निवेदयितुमागतोऽस्मि।
- 24 सप्रसंगान्वयव्याख्या कार्या :- 3
- यत्र मन्दाकिनी पापसंहारिणी
 यत्र गोदावरी चारुसंचारिणी
 देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
 भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ॥
- अथवा
- मरुप्रदेशे ब्रजमाधुरी किं
 रासोत्सवस्तत्र कथं कृपालो।
 कलिन्दकन्यापुलिनं न मंजु
 न ज्ञायते सम्प्रति कौतुकं ते ॥

25 अधोलिखितपद्ययोः कस्यचित् एकस्य सप्रसंगान्वयभावार्थो लेख्यः । 3

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः ।
धारा धरो वर्षति नात्महेतोः
परोपकाराय सतां विभूतयः ।

अथवा

जायते पुष्करं कर्दमात् सर्वदा
कालकूटोद्भवो हन्त रत्नाकरः ।
चान्दरश्चन्द्रिरश्च प्रियो लांछितो
वर्णये तत्प्रमादं कियत् साम्प्रतम् ॥

26 कस्यचित् एकस्य विषयोपरि शतपदेषु संस्कृते निबन्धं लिखत— 4

संस्कृतस्य महत्त्वम्

अथवा

पर्यावरणप्रदूषणम्

27 स्वं राजकीयप्रवेशिकासंस्कृत-विद्यालयः केशवपुरम् इत्यस्य प्रवेशिकाकक्षायाः छात्रः 3

आलोकः इति प्रधानाध्यापकाय दिनद्वयस्य अवकाशाय प्रार्थनापत्रं लिखत ।

अथवा

भवतः मित्रं दिनेशः प्रवेशिकाकक्षायां प्रथमं स्थानं प्राप्तवान् । अतः स्वं जितेशं
मत्वा मित्राय वर्धापनपत्रं लिखत ।

कक्षा – प्रवेशिका (10)

उत्तरमाला (संस्कृत विशेष)

- प्रश्न .1 नपुसकाद् अंगात् परयोः जश्शसोः स्थाने 'शि' आदेशः भवति । 1
2. अ. अहम् आवां वयम् $3/4+3/4=1\frac{1}{2}$
 ब. रमायै रमाभ्यां रमाभिः
3. अ. पतिशब्दः पंचमी/षष्ठीवि. एकवचनम् $3/4+3/4=1\frac{1}{2}$
 ब. गच्छत् शब्दः तृतीयावि. एकवचनम्
4. अ. अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम $3/4+3/4=1\frac{1}{2}$
 ब. दास्यसि दास्यथः दास्यथ
5. अ. नी प्रापणे धातोः वि. लिंगलकार – मध्यमपुरुष–द्विवचनम् $3/4+3/4=1\frac{1}{2}$
 ब. जनी–प्रादुर्भावे धातोः लट्लकार–प्रथमपुरुष–बहुवचनम्
6. अ. बालकेन कथा पठ्यते । 1+1=2
 ब. अहं कलमेन पत्रं लिखामि ।
7. 'दण्डेन घटः' इत्यत्र 'हेतौ' इति सूत्रेण तृतीयाविभाक्तिर्भवति । 2
8. "सुडनपुंसकस्य" इति सूत्रं सर्वनामस्थानसंज्ञायाः अस्ति । यस्यार्थः— स्वादिपंचवचनानि सर्वनामस्थानसंज्ञानि स्युः अक्लीबस्य । नदीसंज्ञायाः सूत्रं "यूस्त्र्याख्यौ नदी" इत्यस्ति । अस्यार्थः— ईदन्तम् ऊदन्तं च नित्यस्त्रीलिंगौ नदीसंज्ञौ स्तः । 2
9. "ङिति ह्रस्वश्च" इयङ्-उवङ्- स्थानौ स्त्रीशब्दभिन्नौ नित्यस्त्रीलिंगौ ईङ्गौ, ह्रस्वौ चवर्णोवर्णौ स्त्रियां वा नदीसंज्ञौ स्तः ङिति । 2
 "औङ आपः" – आबन्तं यदंग तस्मात् परतः स्थितस्य औङः स्थाने शी आदेशः भवति
 "ऋन्तेभ्योःङीप्" – ऋदन्तेभ्यो नान्तेभ्यश्च स्त्रियां ङीप् भवति ।
10. न व्येति इति अव्ययम् अर्थात् यद् त्रिषु लिंगेषु, सर्वासु विभक्तिषु सर्वेषु च वचनेषु विकारं न प्राप्नोति तदव्ययं भवति । 2
11. अ. येनांगविकारः – येन अंगेन विकृतेन अंगिनो विकारो लक्ष्यते, ततः तृतीया भवति, यथा – अक्षणा काणः
 ब. 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' – अवधिभूतं कारकं अपादानसंज्ञकं भवति, यथा धावतः अश्वात् पतति ।
 स. "षष्ठी चानादरे" अनादरे गम्यमाने सति यया क्रियया क्रियान्तरं लक्ष्यते, तस्मात् लक्षकक्रियावाचकात् षष्ठी सप्तमी च भवतः । यथा रुदति रुदतो वा प्राब्राजीत् ।

- 1½+1½=3
12. छन्दसां लक्षणोदाहरणे पाठ्यपुस्तकानुसारम् । 1½+1½=3
13. अलंकाराणां लक्षणोदाहरणे पाठ्यपुस्तकानुसारम् । 1½+1½=3
14. उच्चैः = (महति) बालकः उच्चैः रोदति । 1+1+1=3
 स्मारं स्मारं = (स्मृत्वा-स्मृत्वा) अहं भवन्तं स्मारं स्मारं श्रान्तोऽभवम् ।
 कृत्वा = (कार्यं सम्पादयित्वा) – अहं लेखनं कृत्वा पठामि ।
 यथा – (सादृश्यवाचकः) – यथा रामः लिखति, तथा कृष्णः वदति ।
 विना = (रहितम्) श्रमेण विना सिद्धिर्न भवति ।
 विशेषः – वाक्यानि स्वस्वविवेकानुसारमपि भवितुर्महन्ति ।
15. (i) मनुष्यः – मानुषः, मर्त्यः, मनुजः 1+1+1+1=4
 (ii) वृद्धः – जीनः, जीर्णः, स्थाविरः
 (iii) माता – जननी, प्रसूः, जनयित्री
 (iv) औषधम् – भेषजम्, अगदः, जायुः
16. (i) आयुर्वेदः, धनुर्वेदः, गान्धर्ववेदः, शिल्पवेदश्चोपवेदाः सन्ति । 1+1+1+1=4
 (ii) विन्ध्याचलः, त्रिकुटपर्वतः, नीलगिरिः, हिमालयः, अर्बुदः इत्यादयः
 (iii) तृष्णां छिन्धि, क्षमां भज, मदं जहि, इत्यादयः
 (iv) व्रतदानयज्ञैः देवाः प्रसन्नाः भवन्ति ।
 (v) प. महावीरप्रसाद जोशी 'प्रतापायं पत्रम्' इति पाठस्य लेखकः अस्ति ।
 (vi) श्री रामदेवेन जनानां कष्टाः दूरीकृताः, समाजे व्याप्तानामनेकासां कुप्रथानां रूढीनां च निवारणं कृतम् ।
17. (i) पुत्रे मूर्खे सति मनुजः लज्जां प्राप्नोति । 1+1+1+1+1=5
 (ii) पण्यसंग्रहः नाम उपायः धनार्थं शस्यते ।
 (iii) उदकार्थं सिंहः यमुनातटम् अगच्छत् ।
 (iv) दमनकः सिंहम् अपृच्छत् यत् – “उदकार्थी स्वामी पानीयमपीत्वा किमिति विस्मित इव तिष्ठति” इति ।
 (v) कुट्टिनी आह – “देव! यदि कियद्धनोपक्षयः कियते तदा अहमेन घन्टाकर्णं साधयामि” । इति
 (vi) यः स्वामिकोषं प्रवर्धयति तथा कमण्डलूपमो भवति ।
 (vii) वायसदम्पती कस्मिंश्चिद् तरौ निवसतः ।
18. कथासारः पाठ्यपुस्तकानुसारं भवेत् । 2
19. रूपसिद्धयः पाठ्यपुस्तकानुसारम् । 2½+2½=5
20. रूपसिद्धयः पाठ्यपुस्तकानुसारम् । 2½+2½=5

21. रूपसिद्धयः पाठ्यपुस्तकानुसारम् । 2½+2½=5
22. (i) गां दोग्धि पयः – अत्र “अकथितं च” इतिसूत्रेण कर्मसंज्ञायां द्वितीयाविभक्तिः भवति ।
- (ii) मासम् अधीते – अत्र “कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे” इति सूत्रेण कालवाचकत्वात् मासपदे द्वितीयाविभक्तिः भवति ।
- (iii) पुत्रेण सह आगतः पिता– अत्र “सहयुक्तेऽप्रधाने” इति सूत्रेण अप्रधानकर्तारि पुत्रपदे तृतीयाविभक्तिः भवति ।
- (iv) विप्राय गां ददाति – अत्र “कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्” इतिसूत्रेण विप्रशब्दस्य सम्प्रदानसंज्ञा भूत्वा “चतुर्थी सम्प्रदाने” इति सूत्रेण चतुर्थीविभक्तिः भवति ।
- (v) ग्रामाद् आयाति – अत्र “ध्रुवमपायेऽपादानम्” इति सूत्रेण ग्रामशब्दस्य अपादानसंज्ञा भूत्वा “अपादाने पंचमी” इति सूत्रेण पंचमीविभक्तिः भवति ।
- (vi) हरये नमः – अत्र “नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलं वषट्योगाच्च” इति सूत्रेण नमः योगे हरिपदे चतुर्थीविभक्तिः प्रयुक्ता अस्ति ।
- (vii) राज्ञः पुरुषः – अत्र स्वस्वामिभावादिसम्बन्धत्वात् “षष्ठी शेषे” इति सूत्रेण षष्ठीविभक्तिः भवति ।
- (viii) “छात्राणां मैत्रः पटुः–अत्र “यतश्च निर्धारणम्” इति सूत्रेण निर्धारणार्थे षष्ठीविभक्तिः अस्ति ।

$$1+1+1+1+1=5$$

23. गद्यभागस्य व्याख्या पाठ्यपुस्तकस्य – पृ.सं. 67, 91 अनुसारम् ! 3
24. पद्यभागस्य व्याख्या पाठ्यपुस्तकस्य – पृ.सं. 156, 186 अनुसारम् ! 3
25. गद्यभागस्य भावार्थः पाठ्यपुस्तकस्य – पृ.सं. 161, 175 अनुसारम् ! 3
26. निबन्धलेखनं पाठ्यपुस्तकस्य – पृ.सं. 126, 129 अनुसारम् ! 4
27. पत्रलेखनं पाठ्यपुस्तकस्य – पृ.सं. 112, 117 अनुसारम् 3

॥ इति ॥